## THE WESTERN CAROLINIAN.


Vol. XIV_-No. 50.
SALISBURY....SATURDAY, MAY 17, 1834.
Whole Number 728.

|  |  |  |  |
| :---: | :---: | :---: | :---: |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
| and |  |  |  |
| ck w |  |  | ${ }^{1 / 8}$ |
|  |  |  |  |
| 为 |  |  | crel |
|  |  |  |  |
| umed 1 lir do |  |  |  |
|  |  |  |  |
| (prcase |  |  | would patiently resign them to he coveted, nomer* |
|  |  |  |  |
| and |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  | frec, bed latating |  |  |
| cell a |  |  |  |
| W, payera: and deces dir |  |  |  |
| ${ }^{\text {a }}$ |  |  |  |
|  |  |  |  |
| Sor |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  | time |
| darat to bim. mimbt tos sprikuted af |  |  |  |
|  |  |  | Theren man ampor |
|  |  |  |  |
| thar of death mod |  |  |  |
|  | , | ${ }_{6} \mathrm{Gmo}$ |  |
|  | "ryo Dand |  | tome mom |
|  |  | , | nimy dor |
|  | m |  |  |
| T | bis |  |  |
| meyly dmp , tha | aimm und tom |  | ,otinerats firt |
|  |  |  |  |
| the wal hat he cold, whach berme |  |  |  |
| did |  |  |  |
| had urged upon dear mother the absutute necesel- |  | cremon juin |  |
|  |  | lown, am mith one im. | diflemit |
|  |  |  |  |
|  | cta | that Aoeals might |  |
|  |  | ave My fitheri eve werr niumd to Heaven |  |
| doing so for three p | d |  |  |
|  |  | , |  |
| g b |  | of ballit to bo futher liteming to | har |
| - mind |  |  |  |
| bem |  |  |  |
|  | deat peard |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  | 0 |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
| Got, in naluog upan ite ouly |  |  |  |
| at he emen ene, extify min | dificuly that in | caty |  |
|  |  | 11 did eommic |  |
|  |  |  |  |
| erst the alvation |  |  |  |
|  |  |  |  |
| aep andit was trated mith |  | purpee. The expreioa of |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  | Fnis suata |
|  | , |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |

[^0]| W Ashington, February 22, 1834. Saturday Afternoon. |  |
| :---: | :---: |
| My Dear Aunt: This is the firint time my pen has ever traced this endcaring appellation in |  |
|  |  |
| has ever traced this egdearing appellation in .re. |  |
| first time, by very many, that my heart has felt drawn towards you, with the yearning which it |  |
|  |  |
| Would daturily feel towards the only near sarri. |  |
|  |  |
| ving relative of my precious and sinted father: and now there is a micredness in this feling, which |  |
| no other tie can give, and which will be enshrined in my heart until it shall cease to beat. |  |
|  |  |
| Your dear son, Judge C , who has indeed been |  |
| 10 us the kindes of friendus in this season of our |  |
|  |  |
| fow weeke ago, in an evening visit to my fatber,by naratigg with how much care you teasured |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |


[^0]:    - the ietter.
    ther, patitiouluryry every, thing which threw light

